

भाषा, व्याकरण एवं लिपि

1. प्रस्तावना

मानव जाति के क्रमिक विकास और इतिहास के पन्नों को पलटने पर यह स्पष्ट होता है कि मनुष्य को 'सामाजिक प्राणी' और 'श्रेष्ठ जीव' बनाने में जिस तत्व ने सर्वाधिक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है, वह है— **भाषा**। भाषा केवल संवाद का साधन नहीं, बल्कि यह मानवीय चेतना, संस्कृति और इतिहास की संवाहिका है।

मनुष्य एक विचारशील प्राणी है। उसके मन में निरंतर नए विचार, भावनाएं, और जिज्ञासाएं उत्पन्न होती रहती हैं। इन अमूर्त विचारों और अनुभूतियों को मूर्त रूप देने के लिए, तथा एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति तक पहुँचाने के लिए जिस माध्यम की आवश्यकता होती है, उसे 'भाषा' कहते हैं। संस्कृत की 'भाष' धातु से निर्मित इस शब्द का शाब्दिक अर्थ है—'बोलना' या 'कहना'।

अतः अकादमिक दृष्टि से हम कह सकते हैं कि, "भाषा वह साधन है जिसके द्वारा मनुष्य बोलकर, सुनकर, लिखकर या पढ़कर अपने भावों और विचारों का आदान-प्रदान करता है।" यह हमारे इतिहास, संस्कृति, संचित ज्ञान-विज्ञान और महान परंपराओं को सुरक्षित रखने की कुंजी है।

2. विश्व और भारत का भाषाई परिदृश्य

संपूर्ण विश्व में हजारों भाषाएं प्रचलित हैं, जो विभिन्न सभ्यताओं की परिचायक हैं। इनमें प्रमुख रूप से हिंदी, संस्कृत, अंग्रेजी, चीनी (मंदारिन), फ्रेंच, जर्मन, स्पेनिश, रूसी, जापानी, अरबी आदि का स्थान आता है।

भारत, जिसे बहुभाषी राष्ट्र होने का गौरव प्राप्त है, 'विविधता में एकता' का प्रत्यक्ष उदाहरण है। भारतीय संविधान की **आठवीं अनुसूची** में वर्तमान में **22 भाषाओं** को मान्यता प्रदान की गई है, जिनमें असमिया, बांग्ला, बोडो, डोगरी, गुजराती, हिंदी, कन्नड़, कश्मीरी, कोंकणी, मैथिली, मलयालम, मणिपुरी, मराठी, नेपाली, उड़िया, पंजाबी, संस्कृत, संथाली, सिंधी, तमिल, तेलुगु और उर्दू शामिल हैं।

इन सबमें **हिंदी** का स्थान सर्वोपरि है क्योंकि यह भारत के सर्वाधिक भू-भाग पर बोली और समझी जाती है। 14 सितंबर, 1949 को भारत की संविधान सभा ने हिंदी को संघ की '**राजभाषा**' (**Official Language**) के रूप में स्वीकार किया।

3. भाषा के विविध रूप और प्रकृति

भाषा कोई स्थिर वस्तु नहीं है; यह एक बहती नदी की तरह है जो निरंतर परिवर्तनशील है। अभिव्यक्ति की दृष्टि से भाषा के मुख्य रूप निम्नलिखित हैं:

(क) मौखिक भाषा (Oral Language)

यह भाषा का मूल और प्रारंभिक रूप है। जब व्यक्ति अपने विचारों को मुख से बोलकर प्रकट करता है और दूसरा उसे सुनकर ग्रहण करता है, तो उसे मौखिक भाषा कहते हैं।

- ▮ **विशेषता:** यह सहज और स्वाभाविक होती है। इसे सीखने के लिए किसी औपचारिक प्रशिक्षण की आवश्यकता नहीं होती; बालक अपने परिवार और परिवेश से अनुकरण द्वारा इसे स्वतः सीख लेता है।
- ▮ **उदाहरण:** आपसी बातचीत, भाषण, वाद-विवाद, टेलीफोन पर चर्चा।

(ख) लिखित भाषा (Written Language)

जब विचारों को लिपि-चिह्नों (Script symbols) के माध्यम से लिखकर व्यक्त किया जाता है, तो उसे लिखित भाषा कहते हैं।

- ▮ **महत्व:** यह भाषा का स्थायी रूप है। इसी के माध्यम से ज्ञान-विज्ञान और साहित्य को पीढ़ियों तक सुरक्षित रखा जाता है। इसकी वर्तनी और व्याकरण को प्रयत्नपूर्वक सीखना पड़ता है।
- ▮ **उदाहरण:** पुस्तकें, समाचार पत्र, शिलालेख, साहित्य और दस्तावेज।

(ग) सांकेतिक भाषा (Symbolic Language)

यद्यपि व्याकरण में इसका विस्तृत अध्ययन नहीं किया जाता, परंतु संकेतों और इशारों (जैसे यातायात पुलिस के संकेत, मूक-बधिरों की भाषा) को भी भाषा का एक गौण रूप माना जाता है।

4. भाषा और बोली: अंतर एवं अंतर्संबंध

भाषा विज्ञान में 'भाषा' और 'बोली' (Dialect) के बीच सूक्ष्म लेकिन महत्वपूर्ण अंतर होता है। एक प्रचलित लोकोक्ति है—

"कोस-कोस पर बदले पानी, चार कोस पर बानी।"

बोली (Dialect)

- ▮ **क्षेत्र:** बोली का क्षेत्र सीमित और स्थानीय होता है।
- ▮ **स्वरूप:** यह मुख्य रूप से आम बोलचाल में प्रयुक्त होती है। इसका अपना व्यवस्थित व्याकरण या मानक शब्दकोश नहीं होता।
- ▮ **साहित्य:** इसमें प्रायः लोकगीत या लोककथाएं होती हैं, किंतु उच्च कोटि का लिखित साहित्य कम होता है।

भाषा (Language)

- ▮ **क्षेत्र:** इसका क्षेत्र विस्तृत और व्यापक होता है।
- ▮ **स्वरूप:** यह व्याकरण सम्मत और मानकीकृत (Standardized) होती है। इसका प्रयोग शासन, शिक्षा और साहित्य में होता है।

- **विकास:** जब कोई बोली विकसित होकर विस्तृत क्षेत्र में फैल जाती है, उसमें साहित्य रचना होने लगती है और उसका व्याकरण निश्चित हो जाता है, तो वह 'विभाषा' और अंततः 'भाषा' का रूप ले लेती है। (उदाहरण: खड़ी बोली और ब्रजभाषा का विकास)।

5. हिंदी की उपभाषाएँ और बोलियाँ (वर्गीकरण)

हिंदी केवल एक भाषा नहीं, बल्कि उत्तर भारत की अनेक बोलियों का एक समूह है। डॉ. जॉर्ज ग्रियर्सन और अन्य भाषाविदों के अनुसार, हिंदी क्षेत्र की बोलियों को **5 उपभाषाओं** और **17-18 मुख्य बोलियों** में वर्गीकृत किया गया है:

क्र.	उपभाषा (Language)	(Sub-क्षेत्र/अपभ्रंश)	प्रमुख बोलियाँ
1.	पश्चिमी हिंदी	शौरसेनी अपभ्रंश	खड़ी बोली (कौरवी), ब्रजभाषा, बुंदेली, हरियाणवी (बांगरूँ), कन्नौजी।
2.	पूर्वी हिंदी	अर्धमागधी अपभ्रंश	अवधी, बघेली, छत्तीसगढ़ी।
3.	बिहारी हिंदी	मागधी अपभ्रंश	भोजपुरी, मगही, मैथिली (मैथिली को 8वीं अनुसूची में स्वतंत्र भाषा का दर्जा भी प्राप्त है)।
4.	राजस्थानी हिंदी	शौरसेनी (नागर)	मारवाड़ी, जयपुरी (ढूँढाड़ी), मेवाती, मालवी। (कुछ विद्वान भीली/बागड़ी को भी जोड़ते हैं)।
5.	पहाड़ी हिंदी	खस अपभ्रंश	गढ़वाली, कुमाऊँनी, मंडियाली (हिमाचली)।

विशेष: जिसे हम आज मानक हिंदी (Standard Hindi) कहते हैं, वह मूल रूप से 'खड़ी बोली' का ही परिष्कृत और व्याकरण-सम्मत रूप है।

6. व्याकरण: भाषा का अनुशासन

किसी भी भाषा की शुद्धता और स्थिरता उसके व्याकरण पर निर्भर करती है। **परिभाषा:** "व्याकरण वह शास्त्र है, जो हमें किसी भाषा को शुद्ध रूप से बोलने, लिखने और पढ़ने के नियमों का ज्ञान कराता है।"

भाषा पहले बनती है, व्याकरण बाद में बनता है। व्याकरण भाषा पर शासन नहीं करता, बल्कि उसकी अनुशासनबद्ध व्याख्या करता है। हिंदी व्याकरण को अध्ययन की सुविधा की दृष्टि से मुख्यतः तीन (और आधुनिक संदर्भ में चार) भागों में बाँटा जाता है:

1. **वर्ण-विचार (Phonology):** इसमें वर्णों (अक्षरों) के स्वरूप, भेद, उच्चारण स्थान और उनके मेल (संधि) का अध्ययन किया जाता है।
2. **शब्द-विचार (Morphology):** इसमें शब्दों की उत्पत्ति (तत्सम/तद्भव), रचना (रूढ़/यौगिक), भेद और रूपांतरण का अध्ययन होता है।

3. **पद-विचार (Morphology & Syntax):** जब शब्द वाक्य में प्रयुक्त होता है तो वह 'पद' कहलाता है। इसमें संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया आदि का पद-परिचय दिया जाता है।
4. **वाक्य-विचार (Syntax):** इसमें वाक्यों की रचना, भेद, विराम-चिह्न और मुहावरों का अध्ययन किया जाता है।

7. लिपि: लेखन की आधारशिला

भाषा की मौखिक ध्वनियों को लिखित रूप देने के लिए जिन चिह्नों (Signs) का प्रयोग किया जाता है, उनकी व्यवस्था को 'लिपि' (Script) कहते हैं।

- ▮ **देवनागरी लिपि:** हिंदी, संस्कृत, मराठी, नेपाली, बोडो, और कोंकणी आदि भाषाओं की लिपि 'देवनागरी' है।
- ▮ **ऐतिहासिक विकास:** इसका विकास प्राचीन भारत की 'ब्राह्मी लिपि' से हुआ है।
- ▮ **विशेषताएँ:**
 - यह **आक्षरिक (Syllabic)** लिपि है।
 - यह **बाएँ से दाएँ** (Left to Right) लिखी जाती है।
 - यह एक **वैज्ञानिक लिपि** है, अर्थात् इसमें 'जैसा बोला जाता है, वैसा ही लिखा जाता है'। प्रत्येक ध्वनि के लिए एक निश्चित चिह्न है।
- ▮ **अन्य लिपियाँ:** पंजाबी की 'गुरुमुखी', अंग्रेजी की 'रोमन', और उर्दू की 'फारसी' लिपि है।

8. मानक हिंदी वर्तनी और वर्णमाला (केंद्रीय हिंदी निदेशालय के अनुसार)

भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय के अधीन **केंद्रीय हिंदी निदेशालय (CHD)** ने हिंदी की वर्तनी और वर्णमाला का मानकीकरण किया है ताकि कार्यालयी और तकनीकी प्रयोग में एकरूपता बनी रहे।

मानक देवनागरी वर्णमाला:

(अ) स्वर (Vowels): ये स्वतंत्र ध्वनियाँ हैं। इनकी संख्या 11 है।

- ▮ ह्रस्व/मूल स्वर: अ, इ, उ, ऋ
- ▮ दीर्घ/संयुक्त स्वर: आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ
- ▮ विशेष: 'ऋ' का प्रयोग केवल तत्सम (संस्कृत) शब्दों में होता है।

(ब) अयोगवाह:

- ▮ अनुस्वार (ं) — जैसे: हंस, गंगा, दिनांक।
- ▮ विसर्ग (ः) — जैसे: पुनः, अतः, प्रातःकाल।
- ▮ अनुनासिक (ँ) — इसे चंद्रबिंदु भी कहते हैं (जैसे: गाँव, दाँत)। यह स्वर का गुण है।

(स) व्यंजन (Consonants): व्यंजन स्वरों की सहायता से बोले जाते हैं।

- ▯ कवर्ग: क, ख, ग, घ, ङ
- ▯ चवर्ग: च, छ, ज, झ, ञ
- ▯ टवर्ग: ट, ठ, ड, ढ, ण (द्विगुण व्यंजन: ङ, ढ - जैसे सड़क, पढ़ना)
- ▯ तवर्ग: त, थ, द, ध, न
- ▯ पवर्ग: प, फ, ब, भ, म
- ▯ अंतःस्थ: य, र, ल, व
- ▯ ऊष्म: श, ष, स, ह
- ▯ संयुक्त व्यंजन:

○ क्ष (क्+ष), त्र (त्+र), ज्ञ (ज्+ञ), श्र (श्+र)।

(द) आगत/गृहीत ध्वनियाँ (Borrowed Sounds): हिंदी की ग्रहणशीलता अद्भुत है। इसने अन्य भाषाओं की ध्वनियों को अपने में समाहित किया है:

1. अर्धचंद्र (ँ): अंग्रेजी के शब्दों के शुद्ध उच्चारण हेतु। जैसे— डॉक्टर (Doctor), कॉलेज (College)। यह 'आ' और 'ओ' के बीच की ध्वनि है।
2. नुक्ता (़): अरबी-फारसी (उर्दू) ध्वनियों के लिए। मुख्य रूप से 'क़, ख़, ग़, ज़, फ़' में। वर्तमान मानक हिंदी में केवल 'ज़' (Z sound) और 'फ़' (F sound) का प्रयोग अनिवार्य सा हो गया है, जैसे— ज़मीन, फ़िल्म।

निष्कर्ष

भाषा सामाजिक व्यवहार और राष्ट्रीय एकता की कड़ी है। हिंदी अपनी वैज्ञानिक लिपि (देवनागरी) और समृद्ध शब्दावली के कारण न केवल भारत की राजभाषा है, बल्कि यह वैश्विक स्तर पर भी अपनी पहचान बना रही है। व्याकरण और मानकीकृत वर्तनी का ज्ञान हमें इस समर्थ भाषा का सही और प्रभावी प्रयोग करने में सक्षम बनाता है।